

समकालीन विश्व में भारत अमेरिका के मध्य सामरिक संबंधों का अध्ययन

विजय दीक्षित, शोधार्थी, एस डी (पी.जी) कॉलेज, गाजियाबाद

प्रस्तावना

भारत और अमेरिका के सामरिक संबंधों का विकास 21 वीं सदी में एक महत्वपूर्ण और स्थायी बदलाव से गुजर चुका है, जो न केवल द्विपक्षीय संबंधों को सुदृढ़ कर रहा है, बल्कि वैश्विक सुरक्षा संरचना पर भी व्यापक प्रभाव डाल रहे हैं। भारत की गुट निरपेक्षता की नीति तथा शीत युद्ध के दौरान अमेरिका के साथ पाकिस्तान के करीबी संबंधों के कारण प्रारंभिक दौर में दोनों देशों के मध्य सीमित संबंध थे। लेकिन 1990 के दशक के अंत में सोवियत संघ के विघटन और भारत के आर्थिक उदारीकरण ने एक नए वैश्विक परिप्रेक्ष्य में दोनों देशों को एक साथ ला दिया है। इस दौरान दोनों देशों के बीच सैन्य, रक्षा, और व्यापारिक संबंधों में तेजी से वृद्धि हुई। 2005 में भारत और अमेरिका के बीच असैन्य परमाणु समझौते ने इस साझेदारी को एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर प्रदान किया, जो न केवल परमाणु क्षेत्र में सहयोग को बढ़ावा देता है, बल्कि दोनों देशों के सैन्य और रणनीतिक सहयोग को भी सशक्त करता है। इसके बाद से, भारत और अमेरिका ने क्षेत्रीय और वैश्विक सुरक्षा, आतंकवाद, समुद्री सुरक्षा, और सामरिक प्रौद्योगिकी में सहयोग को और अधिक मजबूत किया। समकालीन समय में, दोनों देशों की व्यापार साझेदारी, विज्ञान, प्रौद्योगिकी, जलवायु परिवर्तन, और वैश्विक स्वास्थ्य जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर भी विस्तारित हो चुकी है। अमेरिका की “इंडो पैसिफिक” नीति और चीन के बढ़ते प्रभाव के संदर्भ में भारत और अमेरिका के रिश्ते और भी महत्वपूर्ण हो गए हैं। यह शोध पेपर इस सामरिक साझेदारी के विकास, वर्तमान स्थिति, और भविष्य की संभावनाओं का गहन विश्लेषण प्रदान करने का प्रयास करता है।

मुख्य बिंदु: समकालीन विश्व, सामरिक संबंध, क्राड, अंतरराष्ट्रीय मुद्दे, जलवायु परिवर्तन

परिचय

भारत और अमेरिका के सामरिक संबंधों का इतिहास जटिल और विकासशील रहा है, जो दोनों देशों के राजनीतिक, आर्थिक, और सुरक्षा संबंधों के बीच लगातार बदलते परिप्रेक्ष्य को दर्शाता है। 20वीं सदी के मध्य में, भारत और अमेरिका के बीच औपचारिक कूटनीतिक संबंधों की शुरुआत हुई, लेकिन तब दोनों देशों के

बीच के संबंध मुख्यतः सीमित और असंतुलित थे। भारत की स्वतंत्रता के बाद, उसकी गैर-संरक्षित नीति और सोवियत संघ के साथ सामरिक रिश्तों के कारण अमेरिका के साथ उसके संबंधों में कोई विशेष घनिष्ठता नहीं थी (khurana, 2020)। 1950 और 1960 के दशकों में, अमेरिका ने पाकिस्तान के साथ अपने सैन्य संबंधों को प्राथमिकता दी, जिससे भारत की सुरक्षा चिंताएँ और बढ़ गईं (Fair, 2014)। 1990 के दशक में सोवियत संघ के विघटन और भारत में आर्थिक उदारीकरण के बाद, दोनों देशों के बीच रणनीतिक सहयोग में तेजी से बदलाव आया। खासकर 1991 के बाद, अमेरिका ने भारत को एक प्रमुख रणनीतिक साझेदार के रूप में देखा और दोनों देशों के बीच रक्षा, व्यापार और तकनीकी सहयोग में वृद्धि हुई (pant, 2009)। 2005 में भारत-अमेरिका असैन्य परमाणु समझौते ने इस साझेदारी को एक नई दिशा दी, जिसमें भारत को अमेरिकी तकनीक और संसाधनों के उपयोग का अवसर मिला (snyder, 2008)। आज, भारत और अमेरिका के सामरिक संबंध एशिया-प्रशांत क्षेत्र में बढ़ते चीन के प्रभाव का मुकाबला करने, आतंकवाद और क्षेत्रीय सुरक्षा को मजबूत करने के लिए महत्वपूर्ण हैं। दोनों देशों के बीच रक्षा सहयोग, सैन्य अभ्यास और संयुक्त पहलों के माध्यम से साझेदारी में निरंतर वृद्धि हो रही है, जिससे उनके द्विपक्षीय संबंध वैश्विक रणनीतिक दृष्टिकोण में मजबूती से उभर कर सामने आए हैं (Bajpai, 2020)। इसके अतिरिक्त, रक्षा उपकरणों और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी सहयोग बढ़ा है। अमेरिका ने भारत को अत्याधुनिक रक्षा उपकरण और तकनीकें प्रदान की हैं। 2016 में भारत को अमेरिका ने “मेजर डिफेंस पार्टनर” का दर्जा दिया था, जिससे दोनों देशों के बीच रक्षा क्षेत्र में सहयोग को औपचारिक रूप दिया गया। इसके बाद से दोनों देश आपसी रक्षा उत्पादन और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण को बढ़ावा दे रहे हैं। अमेरिका की “इंडो-पैसिफिक” रणनीति में भारत एक महत्वपूर्ण साझेदार है। इस क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव को संतुलित करने के लिए दोनों देशों के बीच सहयोग को प्राथमिकता दी जा रही है। इस संदर्भ में “क्वाड” समूह, जिसमें भारत, अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया शामिल हैं, का भी गठन हुआ है। सामरिक संबंधों के साथ-साथ आर्थिक और तकनीकी सहयोग भी बढ़ा है। दोनों देश तकनीकी साझेदारी, साइबर सुरक्षा, और आर्थिक विकास के क्षेत्रों में सहयोग कर रहे हैं। भारत और अमेरिका ने कई अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर समान विचारधारा अपनाई है। दोनों देश आतंकवाद, जलवायु परिवर्तन, और वैश्विक व्यापार से जुड़े मुद्दों पर एक-दूसरे का समर्थन करते रहे हैं। वर्तमान समय में भारत-अमेरिका संबंधों में सामरिक संबंध एक मजबूत स्तंभ के रूप में उभर रहे हैं। यह संबंध न केवल दोनों देशों के राष्ट्रीय हितों को सुरक्षित करने में सहायक है, बल्कि वैश्विक स्थिरता और शांति बनाए रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

भारत और अमेरिका के सामरिक संबंधों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में विभिन्न चरणों और महत्वपूर्ण घटनाओं का योगदान रहा है। इस संबंध की शुरुआत 20वीं सदी के मध्य में हुई थी, जब दोनों देशों के बीच औपचारिक कूटनीतिक संपर्क स्थापित हुए। हालांकि, प्रारंभ में दोनों देशों के बीच अधिक अंतरराष्ट्रीय सहयोग नहीं था, विशेष रूप से भारत की स्वतंत्रता के बाद। भारतीय विदेश नीति ने शुरुआत में पश्चिमी देशों के बजाय सोवियत संघ के साथ अच्छे संबंध बनाए रखे, और यह समय अमेरिका के लिए चुनौतीपूर्ण था। भारत की गैर-संरक्षित नीति और तत्कालीन अंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में यह संबंध सीमित थे (Kapur, 2007)। 1950 और 1960 के दशक में, भारत और अमेरिका के बीच सामरिक और राजनीतिक संबंध एकदम सीमित थे, और अमेरिका ने पाकिस्तान के साथ अपने सामरिक संबंधों को प्राथमिकता दी। पाकिस्तान के साथ अमेरिका के सैन्य समझौते ने भारत को असुरक्षित महसूस कराया, विशेष रूप से जब पाकिस्तान को अमेरिकी सैन्य सहायता प्राप्त थी (Fair, 2014)। इस समय भारत ने सोवियत संघ के साथ अपनी रणनीतिक साझेदारी को मजबूत किया, जिसके परिणामस्वरूप 1971 के भारत-पाकिस्तान युद्ध में सोवियत संघ ने भारत का समर्थन किया, जबकि अमेरिका ने पाकिस्तान का पक्ष लिया। यह स्थिति भारत और अमेरिका के संबंधों में एक बड़े अंतराल का कारण बनी। 1980 के दशक में, भारतीय उपमहाद्वीप में शीत युद्ध के प्रभाव में, भारत और अमेरिका के संबंधों में थोड़ी सी नमी आई। हालांकि, इस अवधि में भी भारत और अमेरिका के बीच सहयोग सीमित था, लेकिन 1990 के दशक में बदलते वैश्विक परिदृश्य ने इन संबंधों को एक नई दिशा दी। सोवियत संघ का विघटन और भारत में आर्थिक उदारीकरण ने दोनों देशों के लिए नए अवसरों की राह खोली। 1991 के बाद, अमेरिका ने भारत को एक महत्वपूर्ण सामरिक साझेदार के रूप में देखा और दोनों देशों के बीच व्यापार, तकनीकी, और रक्षा क्षेत्र में सहयोग बढ़ने लगा (Pant, 2009)। 2000 के दशक में, भारत-अमेरिका संबंधों में एक नई ऊर्जा आई, खासकर जब 2005 में भारत और अमेरिका के बीच असैन्य परमाणु समझौता हुआ। इस समझौते ने दोनों देशों के बीच रक्षा सहयोग को नई दिशा दी और भारत को परमाणु ऊर्जा तकनीक में सहयोग प्राप्त हुआ। इसके साथ ही, दोनों देशों ने आपसी सैन्य अभ्यास और अन्य सामरिक पहलुओं में भी सहयोग बढ़ाया, जिससे उनके सामरिक संबंधों में मजबूती आई। इन सभी घटनाओं से यह स्पष्ट है कि भारत और अमेरिका के बीच सामरिक संबंधों का विकास एक जटिल और परिवर्तनशील प्रक्रिया रहा है, जिसमें अंतरराष्ट्रीय संदर्भ, राजनीतिक प्राथमिकताएँ, और सुरक्षा चिंताएँ प्रमुख भूमिका निभाती हैं (Singh, 2014)।

सैद्धांतिक पृष्ठभूमि

भारत और अमेरिका के सामरिक संबंधों का सैद्धांतिक पृष्ठभूमि को समझने के लिए कुछ महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय संबंधों के सिद्धांतों और दृष्टिकोणों का संदर्भ लिया जा सकता है। यह दृष्टिकोण प्रमुख रूप से यथार्थवाद, उदारवाद, और रचनावाद जैसे सिद्धांतों के आधार पर विकसित होते हैं, जो दोनों देशों के संबंधों को विभिन्न तरीकों से विश्लेषित करते हैं। यथार्थवादी सिद्धांत के अनुसार, अंतरराष्ट्रीय राजनीति में राज्यों के रिश्ते शक्ति और राष्ट्रीय सुरक्षा की दिशा में होते हैं, और इसके तहत देशों का व्यवहार अपनी शक्ति के संतुलन के आधार पर होता है (Mearsheimer, 2014)। इसके द्वारा, भारत और अमेरिका के सामरिक संबंधों को मुख्य रूप से दोनों देशों के राष्ट्रीय सुरक्षा हितों और शक्ति संतुलन के दृष्टिकोण से देखा जा सकता है। भारत, जो अपने एशियाई पड़ोसी देशों, विशेषकर चीन और पाकिस्तान से संबंधित सुरक्षा चुनौतियों का सामना करता है, अपनी रक्षा रणनीतियों को इस प्रकार विकसित करता है कि वह वैश्विक शक्ति संतुलन में अमेरिका से सहयोग प्राप्त कर सके (Khurana, 2020)। अमेरिका के लिए, भारत एक रणनीतिक साझेदार है जो हिंद-प्रशांत क्षेत्र में चीन के प्रभाव का मुकाबला करने के लिए आवश्यक है, और इसलिए अमेरिका ने भारत के साथ अपनी सैन्य साझेदारी को मजबूत किया है। उदारवादी दृष्टिकोण यह मानता है कि राज्य केवल शक्ति के खेल में नहीं होते, बल्कि वे आपसी सहयोग और संस्थागत संरचनाओं के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा में योगदान करते हैं (Keohane & Nye, 2011)। लिबरल दृष्टिकोण के तहत, भारत और अमेरिका के सामरिक संबंधों को विशेष रूप से उनके आर्थिक सहयोग, व्यापार समझौतों, और वैश्विक शासन में साझेदारी के संदर्भ में देखा जा सकता है। दोनों देशों ने वैश्विक स्थिरता और सुरक्षा को बढ़ावा देने के लिए अनेक बहुपक्षीय मंचों का निर्माण किया है, जैसे कि क्राइ और एशिया-पैसिफिक आर्थिक सहयोग, जिनके तहत उन्हें एक-दूसरे के साथ सहयोग बढ़ाने का अवसर मिलता है। इसके अलावा, भारत और अमेरिका के व्यापारिक रिश्ते भी आपसी विश्वास और अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं के भीतर सुधार के प्रयासों को बढ़ावा देते हैं। रचनावाद सिद्धांत की यह मान्यता है कि अंतरराष्ट्रीय संबंध केवल भौतिक ताकतों से नहीं, बल्कि सामाजिक संरचनाओं, सांस्कृतिक मूल्यों, और पहचान से भी प्रभावित होते हैं (Wendt, 1999)। इस दृष्टिकोण से, भारत और अमेरिका के सामरिक संबंधों को उनकी सांस्कृतिक और ऐतिहासिक साझेदारी, और दोनों देशों के राजनीतिक और सामरिक परिप्रेक्ष्य के आधार पर समझा जा सकता है। कंस्ट्रक्टिविस्ट दृष्टिकोण के अनुसार, भारत और अमेरिका के बीच बढ़ता हुआ सामरिक सहयोग उनके साझा लोकतांत्रिक मूल्यों, मानवाधिकारों की रक्षा, और कानून के शासन के प्रति प्रतिबद्धता के कारण है। यह साझेदारी दोनों देशों की वैश्विक पहचान और उनके सामरिक विचारों के विस्तार का एक हिस्सा बनती जा रही है, जो न केवल क्षेत्रीय बल्कि वैश्विक स्थिरता को भी बढ़ावा देती है। अंततः इन सिद्धांतों का संयोजन भारत और अमेरिका के सामरिक संबंधों को

एक गहरे और बहुआयामी दृष्टिकोण से समझने की संभावना प्रदान करता है। यथार्थवाद सुरक्षा और शक्ति के पहलू पर जोर देता है, जबकि उदारवाद, रचनावाद आर्थिक सहयोग, संस्थागत संबंधों और साझा मूल्यों को केंद्रीय स्थान पर रखते हैं, जो अंततः दोनों देशों के रणनीतिक संबंधों को स्थिर और प्रभावी बनाने में योगदान करते हैं (Bajpai, 2020; Nye, 2016)।

21वीं सदी में भारत अमेरिका के मध्य सामरिक संबंधों

2000 के दशक में भारत और अमेरिका के बीच संबंधों में एक नए युग की शुरुआत हुई। 2005 में, दोनों देशों के बीच ऐतिहासिक परमाणु समझौता हुआ, जिसने दोनों के बीच सामरिक साझेदारी को नई दिशा दी। यह समझौता भारत की नागरिक परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम को समर्थन प्रदान करने के साथ-साथ सामरिक संबंधों को गहरा करने में मददगार साबित हुआ। 2014 के बाद से भारत और अमेरिका के बीच सामरिक संबंधों में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। इस अवधि में दोनों देशों के बीच रक्षा सहयोग, रणनीतिक साझेदारी, और आपसी सैन्य अभ्यासों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। भारत और अमेरिका के सामरिक संबंध हाल के वर्षों में अत्यधिक मजबूत हुए हैं, जो एक सशक्त और रणनीतिक साझेदारी की दिशा में अग्रसर हैं। इन संबंधों ने विभिन्न क्षेत्रों में विस्तार किया है, जिसमें रक्षा, व्यापार, आतंकवाद से निपटना, और वैश्विक स्थिरता को बढ़ावा देना शामिल हैं। दोनों देशों की साझेदारी न केवल द्विपक्षीय बल्कि बहुपक्षीय ढांचे में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है।

1. रक्षा सहयोग और सैन्य संबंध: भारत और अमेरिका के बीच रक्षा सहयोग 21वीं सदी में तेजी से बढ़ा है, जो न केवल पारंपरिक हथियारों और सैन्य उपकरणों के क्षेत्र में, बल्कि उभरती प्रौद्योगिकियों जैसे साइबर सुरक्षा, क्यूब-सेट उपग्रह और कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) में भी हो रहा है। 2005 में भारत-अमेरिका असैन्य परमाणु समझौता के बाद, दोनों देशों के रक्षा संबंधों में अभूतपूर्व विस्तार हुआ। इस समझौते ने दोनों देशों के बीच रक्षा साझेदारी को एक नया मोड़ दिया और भारत को अमेरिकी हथियारों, तकनीकी सहायता और सैन्य उपकरणों की प्राप्ति में सक्षम बनाया। अमेरिका और भारत ने कई रक्षा समझौतों पर हस्ताक्षर किए हैं जैसे COMCASA (Communications Compatibility and Security Agreement), LEMOA (Logistics Exchange Memorandum of Agreement), □□ BECA (Basic Exchange and Cooperation Agreement for Geospatial Intelligence), जो दोनों देशों के सैन्य बलों के बीच एकीकरण को बढ़ावा देते हैं। इन समझौतों के तहत, दोनों देशों के सैनिकों और सैन्य उपकरणों के बीच सामरिक सहयोग और संपर्क को प्रोत्साहित किया गया है। इस सहयोग का एक महत्वपूर्ण उदाहरण संयुक्त सैन्य अभ्यासों के रूप में सामने आता है।

“मालाबार” जैसे अभ्यास, जिसमें भारत, अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया शामिल होते हैं, हिंद-प्रशांत क्षेत्र में समुद्री सुरक्षा और सामूहिक रक्षा प्रयासों को बढ़ावा देते हैं। इसके अलावा, “युद्ध अभ्यास” और “कॉमन ग्राउंड” जैसे कार्यक्रम भी दोनों देशों के बीच सामरिक समझ और इंटरऑपरेबिलिटी को मजबूत करते हैं।

2. भारत-अमेरिका रक्षा नवाचार और INDUS-X: सितंबर 2024 में, भारत और अमेरिका ने INDUS-X" (India-US Defense Acceleration Ecosystem) का उद्घाटन किया, जिसका उद्देश्य रक्षा नवाचार में सहयोग बढ़ाना और नई सैन्य प्रौद्योगिकियों का संयुक्त विकास करना है। INDUS-X, सैन्य उपकरणों के विकास में भारतीय और अमेरिकी रक्षा उद्योगों के बीच सहयोग बढ़ाने के लिए एक प्लेटफॉर्म है। इस कार्यक्रम के तहत, दोनों देशों के स्टार्टअप्स और छोटे रक्षा उद्योगों को नए सैन्य उत्पादों के निर्माण के लिए पुरस्कारों की पेशकश की जाती है, जो दोनों देशों की नौसेनाओं की क्षमताओं को बढ़ाने में सहायक हैं। इस प्रकार के सहयोग ने पिछले कुछ वर्षों में दोनों देशों के रक्षा उद्योगों को आपस में और अधिक जोड़ दिया है।

3. क्वाड और हिंद-प्रशांत क्षेत्र सुरक्षा: भारत और अमेरिका के सामरिक संबंधों का एक प्रमुख हिस्सा □□□□□ के माध्यम से प्रकट हुआ है। क्वाड में भारत, अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के चार देश शामिल हैं, जो हिंद-प्रशांत क्षेत्र में शांति और स्थिरता बनाए रखने के लिए सहयोग करते हैं। यह गठबंधन चीन के बढ़ते प्रभाव और सैन्य विस्तार को संतुलित करने के लिए एक महत्वपूर्ण पहल है। क्वाड के माध्यम से, भारत और अमेरिका ने क्षेत्रीय सुरक्षा, आतंकवाद, समुद्री सुरक्षा, और आपसी रक्षा सहयोग को बढ़ावा दिया है। भारत और अमेरिका ने हिंद-प्रशांत क्षेत्र में समुद्री सुरक्षा और स्वतंत्र व्यापार मार्गों की रक्षा करने के लिए एकजुट होकर कई सामरिक पहल की हैं। दोनों देशों ने समुद्रों में अपने सैन्य अभ्यासों और परिचालन सहयोग को बढ़ाया है, जो क्षेत्रीय सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण है।

4. आतंकवाद और आंतरिक सुरक्षा पर सहयोग: भारत और अमेरिका का आतंकवाद के खिलाफ साझा संघर्ष महत्वपूर्ण रहा है। 9/11 के बाद, दोनों देशों के बीच आतंकवाद विरोधी सहयोग में वृद्धि हुई। अमेरिका ने भारत को आतंकवाद से लड़ने के लिए खुफिया जानकारी साझा की और तकनीकी सहायता प्रदान की। इसके अलावा, दोनों देशों ने आतंकवादी समूहों के खिलाफ संयुक्त सैन्य और कूटनीतिक प्रयासों को मजबूत किया है। उदाहरण के तौर पर, पाकिस्तान स्थित आतंकवादी संगठनों के खिलाफ भारत और अमेरिका के बीच सहयोग बढ़ा है, और संयुक्त राष्ट्र में आतंकवादियों के खिलाफ प्रस्तावों का समर्थन किया गया है।

5. वैश्विक मुद्दों पर सहयोग: भारत और अमेरिका के बीच सामरिक सहयोग केवल रक्षा तक सीमित नहीं है। दोनों देशों ने जलवायु परिवर्तन, वैश्विक स्वास्थ्य, और आर्थिक सहयोग के मुद्दों पर भी एकजुट होकर काम किया है। भारत-अमेरिका की साझेदारी पर्यावरणीय स्थिरता के लिए महत्वपूर्ण है, और दोनों देशों ने मिलकर स्वच्छ ऊर्जा प्रौद्योगिकियों और जलवायु परिवर्तन के खिलाफ संघर्ष में सहमति बनाई है। इसी प्रकार, दोनों देशों के बीच वैश्विक व्यापार और निवेश सहयोग ने आर्थिक और सामरिक स्थिरता को बढ़ावा दिया है।

6. भारत के वैश्विक कूटनीतिक महत्व में वृद्धि: भारत और अमेरिका का सामरिक सहयोग न केवल द्विपक्षीय बल्कि वैश्विक स्तर पर भी महत्वपूर्ण है। अमेरिका ने भारत को विभिन्न अंतरराष्ट्रीय मंचों पर समर्थन दिया है, जैसे संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत की स्थायी सदस्यता के लिए समर्थन। इसके अतिरिक्त, भारत और अमेरिका ने वैश्विक सुरक्षा और स्थिरता के लिए एक साझा दृष्टिकोण अपनाया है। यह साझा दृष्टिकोण पाकिस्तान, अफगानिस्तान, और अन्य वैश्विक मुद्दों पर आधारित है।

भारत और अमेरिका के बीच सामरिक संबंध एक गहरे और बहुआयामी सहयोग की ओर अग्रसर हैं। इन संबंधों का विस्तार न केवल रक्षा और व्यापार में है, बल्कि आतंकवाद, वैश्विक स्वास्थ्य, जलवायु परिवर्तन और क्षेत्रीय सुरक्षा जैसे प्रमुख मुद्दों में भी हुआ है। दोनों देशों का सामरिक सहयोग वर्तमान में दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण रणनीतिक साझेदारियों में से एक है। यह साझेदारी न केवल द्विपक्षीय बल्कि वैश्विक स्तर पर भी शांति, सुरक्षा और स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है। 2016 में, अमेरिका ने भारत को “मेजर डिफेंस पार्टनर” का दर्जा दिया, जिससे रक्षा तकनीक और उपकरणों की बिक्री में बढ़ोतरी हुई। 2020 में, भारत और अमेरिका ने बेसिक एक्सचेंज एंड कोऑपरेशन एग्रीमेंट पर हस्ताक्षर किए, जो दोनों देशों के बीच जियोस्पेशियल इंटेलिजेंस साझा करने की अनुमति देता है। 2014 के बाद से भारत और अमेरिका के बीच कई बड़े रक्षा सौदे हुए हैं, जिनमें C-17 ग्लोबमास्टर, अपाचे और चिनूक हेलीकॉप्टर्स की खरीद शामिल है। दोनों देशों के बीच नियमित रूप से त्रि-सेवा सैन्य अभ्यास, जैसे कि ‘मालाबार’ का आयोजन किया जाता है, जिसमें जापान भी शामिल है। 2014 के बाद, विशेष रूप से दक्षिण चीन सागर और हिंद महासागर में चीन की बढ़ती गतिविधियों के मद्देनजर, भारत और अमेरिका के बीच सामरिक सहयोग और भी मजबूत हुआ है। दोनों देश इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में एक स्थिर और सुरक्षित वातावरण सुनिश्चित करने के लिए काम कर रहे हैं। 2017 में, क्वाड का पुनः सक्रियण हुआ, जिसमें इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में रणनीतिक संतुलन बनाए रखने पर ध्यान केंद्रित किया गया। भारत और अमेरिका ने आतंकवाद, साइबर सुरक्षा, और अंतरिक्ष में रक्षा सहयोग पर भी आपसी समझौते किए हैं, जो वैश्विक सुरक्षा के मुद्दों पर उनके सामरिक संबंधों को और मजबूत करते

हैं। इन प्रयासों से भारत और अमेरिका के बीच सामरिक संबंध एक नई ऊंचाई पर पहुंच गए हैं, और दोनों देश अब विभिन्न क्षेत्रों में मिलकर काम कर रहे हैं।

आलोचनात्मक मूल्यांकन

भारत की रूस के साथ ऐतिहासिक रूप से मजबूत रक्षा संबंध रहे हैं, जो 2014 के बाद अमेरिका के साथ बढ़ते संबंधों के कारण तनावपूर्ण हो सकते हैं। इसी प्रकार, चीन के साथ बढ़ते सीमा विवाद और भारत की अमेरिका के साथ नजदीकी ने चीन-भारत संबंधों को और खराब किया है। भारत पारंपरिक रूप से गुटनिरपेक्ष आंदोलन का हिस्सा रहा है, लेकिन अमेरिका के साथ बढ़ते सामरिक संबंधों ने भारत की गैर-संरक्षण नीति को चुनौती दी है, जिससे देश की स्वतंत्र कूटनीति प्रभावित हो सकती है। कुछ आलोचकों का मानना है कि अमेरिका के साथ बढ़ते संबंधों से भारत की स्वतंत्र रक्षा और विदेश नीति पर अमेरिकी प्रभाव बढ़ सकता है, जिससे भारत की रणनीतिक स्वायत्तता पर आंच आ सकती है। भारत ने अमेरिकी रक्षा तकनीक में निवेश किया है, लेकिन इस प्रक्रिया में तकनीकी हस्तांतरण की गति और सीमा पर सवाल उठाए जाते हैं। अमेरिका ने संवेदनशील तकनीकों को साझा करने में हमेशा सीमित दृष्टिकोण अपनाया है। अमेरिका से उन्नत सैन्य उपकरण खरीदने के कारण भारत का रक्षा बजट काफी बढ़ गया है, जिससे अन्य सामाजिक और विकास संबंधी क्षेत्रों पर दबाव पड़ा है। अमेरिका से आयातित रक्षा उपकरणों ने भारतीय रक्षा उद्योग के विकास पर भी नकारात्मक प्रभाव डाला है, जिससे स्वदेशी उत्पादन को बढ़ावा देने की भारत की क्षमता में कमी आई है। क्वाड को भारत की सामरिक सुरक्षा में एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में देखा जाता है, कुछ विशेषज्ञों का मानना है कि इस समूह के माध्यम से भारत-प्रशांत क्षेत्र में शांति और स्थिरता बनाए रखना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। खासकर चीन के साथ किसी भी संघर्ष की स्थिति में क्वाड की प्रभावशीलता पर सवाल उठाए जाते हैं। क्वाड के सदस्य देशों के बीच अलग-अलग प्राथमिकताएं और नीतियाँ हैं, जो इस समूह की सामरिक क्षमता को सीमित करती हैं। भारत में अमेरिका के साथ गहरे संबंधों को लेकर लोकलुभावन विचारधारा के तहत संदेह और प्रतिरोध भी देखा जाता है, विशेषकर अमेरिका की पूर्ववर्ती नीतियों के संदर्भ में जो भारत के लिए हमेशा अनुकूल नहीं रही हैं। अमेरिका के साथ निकट संबंधों के कारण क्षेत्रीय राजनीति में अस्थिरता का जोखिम बढ़ सकता है, खासकर पाकिस्तान जैसे पड़ोसी देशों के साथ। भारत और अमेरिका के बीच 2014 के बाद बढ़ते सामरिक संबंध दोनों देशों के लिए कई सकारात्मक परिणाम लाए हैं, लेकिन इन संबंधों को बनाए रखने और संतुलित करने के लिए भारत को अपनी स्वायत्तता, क्षेत्रीय संतुलन, और आंतरिक विकास

के बीच संतुलन साधना होगा। इन संबंधों में पारदर्शिता और आपसी सम्मान बनाए रखना आवश्यक है ताकि यह साझेदारी दीर्घकालिक और स्थिर बनी रहे।

निष्कर्ष

2014 के बाद से भारत और अमेरिका के सामरिक संबंधों में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, जिससे दोनों देशों के बीच रक्षा, सुरक्षा, और रणनीतिक साझेदारी के नए आयाम खुले हैं। हालांकि, इस संबंध की प्रगति के साथ-साथ चुनौतियाँ और आलोचनाएँ भी सामने आई हैं। भारत को अपनी पारंपरिक गुटनिरपेक्ष नीति और क्षेत्रीय संतुलन को बनाए रखने के साथ-साथ अमेरिका के साथ बढ़ते सहयोग के बीच संतुलन साधने की आवश्यकता है। संबंधों के विस्तार से जहां रक्षा तकनीक और सैन्य क्षमता में सुधार हुआ है, वहीं भारत की स्वतंत्र विदेश नीति, रक्षा स्वायत्तता, और आंतरिक विकास पर भी इसके प्रभावों का समुचित मूल्यांकन करना जरूरी है। अंततः, यह साझेदारी भारत के लिए सुरक्षा और विकास के नए अवसर लेकर आई है, लेकिन इसके साथ जुड़े संभावित जोखिमों का सावधानीपूर्वक प्रबंधन करना महत्वपूर्ण होगा। दोनों देशों के बीच संबंधों को मजबूत करने के लिए आपसी सम्मान, पारदर्शिता, और संतुलन बनाए रखना आवश्यक है ताकि यह साझेदारी दीर्घकालिक और स्थिर बनी रहे।

References

- Bajpai, K. (2020). "India and America: A Historical Review of the Strategic Partnership". *Asian Journal of International Affairs*, 8(2), 11-25.
- Cohen, Stephen P., *The South Asia Papers: A Critical Anthology of Writings by Stephen Philip Cohen*, Brookings Institution Press, 2016.
- Chatterjee, Anusree, *Indo-US Relations: Issues and Concerns*, Concept Publishing Company, 2016.
- Chaulia, Sreeram, *Modi Doctrine: The Foreign Policy of India's Prime Minister*, Bloomsbury India, 2016.
- Ganguly, S., & Kapur, S. P. (2010). India and the United States: A strategic partnership. *International Studies*, 47(1), 9-30.

Kapur, S. P. (2007). *India's Foreign Policy: A Historical Analysis*. University of California Press.

Keohane, R. O., & Nye, J. S. (2001). *Power and Interdependence*. Longman.

"India-US Strategic Ties: A Review Post 2014", *The Hindu*, March 2022.

Malone, David M., C. Raja Mohan, and Srinath Raghavan, *The Oxford Handbook of Indian Foreign Policy*, Oxford University Press, 2015.

Mearsheimer, J. (2001). *The Tragedy of Great Power Politics*. W.W. Norton & Company.

Miller, Manjari Chatterjee, "India's Feeble Foreign Policy: Rising Power, Insecure State", *The Washington Quarterly*, Vol. 37, No. 4 (2014), pp. 85-99.

Mohan, C. Raja, "India and the Balance of Power", *Foreign Affairs*, Vol. 85, No. 4 (Jul.-Aug., 2006), pp. 17-32.

Mohan, C. Raja, "Rising India: Partner in Shaping the Global Commons?", *The Washington Quarterly*, Vol. 33, No. 3 (2010), pp. 133-148.

Pant, Harsh V., *India-US Relations in the Age of Uncertainty*, Routledge, 2018.

Pant, H. V. (2009). "India's Strategic Culture and the U.S.-India Partnership". *International Politics*, 46(1), 61-81.

Rajagopalan, Rajesh, and Atul Mishra, *Nuclear South Asia: Keywords and Concepts*, Routledge, 2014

Tellis, Ashley J., *India as a New Global Power: An Action Agenda for the United States*, Carnegie Endowment for International Peace, 2005.

Singh, S. (2014). *India and the United States: The Strategic Partnership*. Routledge.

Snyder, S. (2008). *The India-U.S. Nuclear Deal: Promises and Perils*. Council on Foreign Relations.

Waltz, K. (2000). Structural Realism after the Cold War. *International Security*, 25(1), 5-41.

Wendt, A. (1992). Anarchy is what states make of it: The social construction of power politics. *International Organization*, 46(2), 391-425.